# कोशी कमिश्नरी में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास (गाँधी युग में)

डा0 रत्नेश कुमार

ग्राम– मौजमा, पो0– जिरवा, मधेपुरा, बिहार

भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा

सदियों से जकड़े गुलामी की जंजीरों से भारतीय मिट्टी के एक–एक कणो से बड़ियाँ से निकल व स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए आवाज निकलने लगे। ऐसे ही समय में गुजरात स्टेट के पोरबंदर नामक गाँव में करमचंद व पुतलीबाई के घर में निकले चिराग ने हिंदुस्तान को आजादी दिलाकर दुनिया के लिए प्रेरणादायक साबित हुए।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के गाँधी काल में इनके सत्य–अहिंसा पर विश्वास कर कोशी के धरती से सैकड़ों वीर सपूतों ने गुलामी की जंजीरों को भेदने में जेलों के काले कोठी से गुजरे व फाँसी की भेंट चढ़े।

28 जुलाई 1914 को विश्व के मानचित्र पर मित्रराष्ट्र और केंद्रीय शक्ति बल के बीच प्रथम विनाशकारी महायुद्ध का शंखनाद हुआ जिसमें भारतीयों ने चालबाज ब्रिटिश शासकों से भविष्य में आजादी के प्रलोभन पर प्रथम विश्व युद्ध में शारीरिक व आर्थिक रूप से सहयोग किया गाँधीजी ने भारत के प्रबुद्ध नेताओं का भी अंग्रेज सरकार को भरपूर सहयोग मिला परंतु 18 नवंबर 1918 ईस्वी को जब यह विश्वव्यापी लीला का अंत हुआ और मित्रराष्ट्र (अंग्रेज) का विजय हुआ तो भारतीयों को सहानुभूति जगी लेकिन अंग्रेज उल्टे भारत पर 15 बिलियन युद्ध खर्च का बोझ लाद दिया फलतः भारत के कोने–कोने से भिन्न–भिन्न रूपों में स्वाधीनता के लिए आंदोलन का श्रीगणेश हुआ।

चम्पारण आंदोलन :–

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की आजादी का झलक, बिहार के चम्पारण आंदोलन से माना जाता है। कोशी प्रमंडल से सहरसा जिला ग्राम– पंचकछिया वासी बबुआ सिंह मुख्तार के पुत्र– श्री राम बहादुर सिंह का गाँधी जी के स्वतंत्रता की प्रथम सत्याग्रह आंदोलन में काफी सहयोग रहा। महात्मा गाँधी दक्षिण अफ्रीका से 21 वर्ष बिताने के बाद 1915 ईस्वी में एक समाजवादी व प्रतिष्ठित नागरिक के रूप में भारत लौटे उन्होंने चंपारण के किसान नेता रामचंद्र शुक्ल के आग्रह पर वहाँ के अंग्रेज शासन के कारनामा व किसानों की बाध्यता नील की खेती का जायजा लेने आमंत्रित किया। गाँधी जी सत्याग्रह के बल पर इस आंदोलन में किसानों की जीत दिलाई।

दूसरी तरफ खेड़ा व बारदोली में सरदार वल्लभभाई पटेल ने गाँधी–वादी रास्ते से सत्याग्रह के बल पर किसान व मजदूरों का हक दिलाने में कामयाव रहा आम जनता को गाँधी जी पर विश्वास जगने लगे। लोगों में स्वतंत्रता के प्रति उत्साह बढ़ने लगे। सन् 1918 ईस्वी में दिल्ली कांग्रेस का अधिवेशन का आयोजन किया गया जहाँ ग्रामीण जनता को स्वतंत्रता के प्रति जागरूक किया जा सके।

हजारों की संख्या में किसान दिल्ली पहुंचे। बाबू रामबहादुर सिंह कोशी क्षेत्र से रतिक लाल शर्मा, रामरक्षा ठाकुर मधेपुरा से रास बिहारी लाल मंडल ऑल इंडिया के सदस्य व अन्य लोगों के साथ दिल्ली पहुँचे थे। गाँधी जी–संगठन के माध्यम से भारत पर युद्ध का खर्च 15 बिलियन खर्च का बोझ लादा गया, उससे मुक्ति किया जाए साथ ही महायुद्ध के पश्चात जो सभ्य–असभ्य देशों के प्रति आत्मनिर्णय का सिद्धांत व मनमाने ढंग से देश से शासन प्रणाली को बंद करने का पुरजोर विरोध किया गया। प्रधानमंत्री मिस्टर लायर्ड ने भारत में राजनीतिज्ञ नेता लोकमान्य तिलक गाँधी जी और हसन इमाम को कमेटी प्रतिनिधि के रुप में समस्या निदान हेतु चुना गया।

इसी बीच ब्रिटिश सरकार भारतीयों के बढ़ते उत्साह व आंदोलन कारियों के प्रति 18 मार्च 1919 ई0 में ''रॉलेक्ट एक्ट'' (काला कानून) प्रस्ताव पास किया। जिसमें कहा गया था कि न कोई वकील, न कोई दलील, न कोई जलील संदेहात्मक व्यक्ति को सीधे कारावास की सजा का प्रस्ताव था इस कानून सहित कई नेताओं का शिकार डॉ0 सत्यपाल, डॉ0 किच्चुल और कोशी के गाँधी– राम बहादुर बाबू को सहित कई नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। 13 अप्रैल 1919 ई0 को जलियांवाला बाग में हजारों की संख्या में क्रांतिकारी गिरफ्तारी के विरूद्ध एकत्रित हुए, जिसपर जनरल डायर ने गोलियों की बारिश कर शांतिपूर्ण सभा में 379 की मौत व हजारों की संख्या में घायल कर दिया। भारतीय क्रांतिकारियों में एकता कायम होने लगे मधेपुरा से भी सभी विरोध जताने लगे।

सन् 1912 ई0 में भागलपुर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष दीप नारायण सिंह ने मधेपुरा में श्याम सुंदर प्रसाद के नेतृत्व में कांग्रेस कमेटी का गठन किया गया। जिसमें बाबू जय नारायण मंडल, बाबू गिरधर नारायण मंडल, बाबू विश्वनाथ झा, बाबू राज किशोर चौधरी और काजी राजा हुसैन आदि प्रमुख थे। मुरहो वासी शिवनंदन प्रसाद मंडल भी शिक्षक पद से त्यागपत्र देकर कांग्रेस में शामिल हो गये। इसी वर्ष डॉ0 राजेंद्र प्रसाद, डॉ श्रीकृष्ण सिंह, दीप नारायण सिंह एवं सरदार पटेल मधेपुरा पहुँचकर मुख्तार मो0 रजा हुसैन के यहाँ ठहर कर कई सभा को संबोधित किए। इस कार्य का संचालन मधेपुरा के छात्र नंदकिशोर चौधरी (स्वयं सेवक दल) ने किया। इसके पश्चात् पंचगछिया पहुँचे जहाँ बाबू राम बहादुर सिंह, बाबू योगेंद्र नारायण और बाबू लक्ष्मी नारायण सिंह आदि का सक्रिय सहयोग रहा।

असहयोग आंदोलन :–

गाँधी जी के द्वारा रॉलेक्ट एक्ट व जलियांवाला बाग के हत्याकांड के विरोध में 1920–22 ई0 में ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध आंदोलन चलाया गया। जिसमें कोसी क्षेत्र बढ़–चढ़ कर भाग लिया। आंदोलन के लिए स्वयं सेवकों की भर्ती होने लगी तथा स्कूल–कॉलेज का बहिष्कार और चरखा आंदोलन को प्रमुखता के साथ चलाए गए। राम बहादुर सिंह कोशी क्षेत्र में अहिंसात्मक आंदोलन को जन–जन तक पहुँचाने के लिए जुट गए। साथ ही कार्य को सुचारू रूप से संचालन हेतु सरकारी उपाधि व पदों का त्याग किया गया। सरकारी स्कूल को त्यागकर राष्ट्रीय स्कूल कॉलेजों में बच्चों को पढ़ाये जाने लगा। वकील द्वारा न्यायालय का बहिष्कार किया गया। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया गया। आंदोलन को सफल बनाने के लिए चरखा का प्रचार प्रसार तीव्र गति से किया गया। देशबंधु चितरंजन दास ने भी 11 व 14 फरवरी 1921 ई0 को पटना में अपने भाषण के माध्यम से कहा था कि मैं एक क्षण भी यूरोपीय उद्योगवाद के पक्ष में नहीं हो सकता। आम जनता चरखा चलाते हैं तो आजादी मिलने में कोई संदेह नहीं है। 16 अगस्त 1921 ई0 को कांग्रेस कमेटी का बैठक पटना सदाकत आश्रम किया गया। जिसमें महात्मा

गांधी, पंडित मोतीलाल नेहरू, डॉ राजेंद्र प्रसाद, मौलाना मो0 अली और सेठ जामुन लाल बजाज उपस्थित थे।

18 प्रस्ताव स्वीकृत किए गए जिसमें विदेश वस्त्र बहिष्कार महत्वपूर्ण था। इस आंदोलन में भागलपुर जिला अधिक सक्रिय रहा। साथ ही संपूर्ण कोशी क्षेत्र में विदेशी वस्त्रों का होली जलाई गयी। राम बहादुर सिंह के नेतृत्व में मधेपुरा व सुपौल अनुमंडल के युवा वर्ग भाग लिया। असहयोग आंदोलन की ज्वाला संपूर्ण भारत में धधक रही थी इसी बीच 8 फरवरी 1922 ई0 को गोरखपुर जिले के चोरा–चोरी नामक स्थान में कुछ भीड़ ने थाने में आग लगाकर 22 पुलिस को जिंदा जला दिया। लोगों के इस कुकृत से गाँधी जी काफी दुखी हुए और आंदोलन को वापस ले लिया।

बाबू राम बहादुर सिंह, पंडित राजेंद्र मिश्र, पंडित नारायण शर्मा आदि नेताओं ने मधेपुरा से स्वयं सेवकों के माध्यम से गाँव–गाँव जाकर खादी वस्त्रों की आपूर्ति व प्रचार–प्रसार करते थे। मधेपुरा नगर में चरखा केंद्र बाबू चंचल प्रसाद सिंह, काजर जाकर हुसैन, सुरेंद्र नाथ मुखर्जी एवं राज किशोर चौधरी के घर संचालित थे।

अखिल भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस का अधिवेशन दिसंबर 1922 को चितरंजन दास की अध्यक्षता में हुई। इस अधिवेशन में काउंसिल प्रवेश प्रस्ताव अस्वीकृत होने से देशबंधु ने 31 सितंबर 1922 को अध्यक्ष पद से त्यागपत्र देकर स्वयं सेवक पार्टी की स्थापना की जिसका अध्यक्ष देशबंधु व सचिव पंडित मोतीलाल नेहरु बने। इस पार्टी को कोसी क्षेत्र में महासमर्पण मिला। मधेपुरा में कार्यालय के लिए भूमिदान डॉ0 श्याम प्रसाद घोष और भवन निर्माण गंगा प्रसाद सिंह ने करवाया 1923 ई0 में दिल्ली अधिवेशन में स्वराज पार्टी को मान्यता मिली। मधेपुरा का स्वराज ऑफिस शिवनंदन सेवा आश्रम के नाम से जाना जाता है।

सविनय अवज्ञा आंदोलन :–

फरवरी 1930 में अखिल भारतीय कांग्रेस की ग्रेस समिति के अमदाबाद अधिवेशन में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए सविनय अवज्ञा आंदोलन आरंभ करने का प्रस्ताव पारित किया गया। महात्मा गांधी ने नमक सत्याग्रह आंदोलन का श्रीगणेश किया। क्योंकि नमक खाद पदार्थों में से एक आवश्यक वस्तु है, जो गरीबों को आवश्यकतानुसार नहीं मिल पाता यह समुंद्र किनारे से या पहाड़ से मुफ्त में खुद कर लिया जा सकता है। 12 मार्च 1930 को गांधीजी ने 78 स्वयंसेवकों के साथ 6:00 बजे सुबह साबरमती आश्रम से 241 मील पर दाण्डी नामक समुद्री तट पर पहँच कर कानून भंग करने के लिए अपनी यात्रा प्रारंभ की। डॉ0 राजेंद्र प्रसाद बिहार में सत्याग्रह की प्रगति का अवलोकन करने यात्रा पर निकल पड़े। मधेपुरा शुरु से ही दो मोर्चों पर आंदोलन कर रहा था। एक मोर्चा पर मधेपुरा था तो दूसरा पर बिहपुर, किशनगंज आलमनगर और चौसा के सत्याग्रह का मोर्चा बिहपुर था।

बिहपुर भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का महत्वपुर्ण केंन्द्र था। बिहपुर के निकट गौरीपुर ग्राम में नमक सत्याग्रह का आयोजन 1930 को किया गया। पुलिस के जबरदस्त चौकशी के बावजूद भी सत्याग्रहियों ने स्थल पर पहुँच कर नमक कानून को भंग किया। जिसमें जुझारू सत्याग्रही भागवत ठाकुर, नीरो ठाकुर, मुशहरू राम, सत्यदेव मिश्र एवं भोपाल ठाकुर को गिरफ्तार किया। इधर मधेपुरा में नमक सत्याग्रह 5 मई 1930 को मधेपुरा नगर से 4 किलोमीटर दक्षिण सुखासन गाँव में राष्ट्रीय आयोजन स्थल चयन किया गया। जिसका संयोजक बाबू शिवाधीन सिंह जो सुखासन के निवासी थे। 25 हजार (लगभग)

नागरिकों के भीड़ के साथ पुलिस के चौकसी के पश्चात् राम बहादुर सिंह की अध्यक्षता में मिट्टी से नमक तैयार कर कानून को भंग किया गया। यह कला महताब लाल यादव (मधेपुरा) के पुत्र सुबालालू यादव ने किया। पुलिस ने राम बहादुर सिंह को गिरफ्तार कर लिया। भीड़ गिरफ्तार राम बहादुर सिंह के साथ मधेपुरा कचहरी पहुँचे। जहाँ मधेपुरा अनुमंडलीय कांग्रेस समिति के सभापति शिवनंदन प्रसाद मंडल, कमलेश्वरी प्रसाद मंडल एवं महताब लाल यादव के नेतृत्व में सैकड़ों स्वयंसेवकों ने फूल माला लेकर रामबहादुर के स्वागत में खड़े थे। बाद में सैकड़ों सत्याग्रह को मधेपुरा में गिरफ्तार किया गया, परंतु बाढ़ के कारण रेल यातायात भंग होने से प्रमुख नेताओं को छोड़कर बाकी को रिहा कर दिया गया।

अगस्त क्रांति :–

द्वतीय विश्वयुद्ध के दौरान ब्रिटिश सरकार जापानी खतरों से भारतीय रक्षा के लिए चिंतित थे। भारतीयों से सहायता हेतु 18 मार्च 1942 को युद्ध मंत्री मंडल के सदस्य स्टंडफॉर्ट कृप्सन भारत आये और कांग्रेस कार्यकारिणी सदस्यों की बैठक कर कहा कि आप सभी सरकार की मदद करें युद्ध के पश्चात् भारत को पूर्ण औपबंधित स्वतंत्रता दी जाएगी लेकिन स्वराज अवधि निश्चित नहीं कि फलतः 8 अगस्त 1942 को गाँधी जी के नेतृत्व में कांग्रेस अधिवेशन बंबई में संपन्न हुआ। जिसमें भारत छोड़ो आंदोलन का निश्चय किया गया। 10 अगस्त 1942 को नोगछिया में महापंडित राहुल सांकृत्यायन के नेतृत्व में भागलपुर जिला छात्र अधिवेशन संपन्न हुआ बापू ने अंग्रेज के विरुद्ध 'करो या मरो' का नारा दिया।

19 अगस्त को गाँधी जी और राजेंद्र प्रसाद गिरफ्तार कर लिए गए। संपूर्ण बिहार आंदोलनत हो गए।

मधेपुरा क्रांतिकारी का श्री गणेश :–

कोशी क्षेत्र के मधेपुरा सबडिवीजन से 13 अगस्त 1942 को भूपेंद्र नारायण मंडल (रानीपट्टी) बीरेंद्र नारायण सिंह (सरोपट्टी) देवता प्रसाद सिंह (घबोली) के नेतृत्व में एक विशाल जुलूस मधेपुरा कचहरी पहुंचे। जुलूस में अंबिका सिंह दादा भी थे। भुपेंद्र बाबू कचहरी के बरामदे पर खड़े होकर सभी सरकारी पदाधिकारियों को कांग्रेस के कार्यक्रम को पढ़कर सुनाया (इन्होंने वकालत भी मधेपुरा मे ही करते थे) इसी संदर्भ में एक 14 वर्षीय बालक हरे कृष्ण चौधरी सीढ़ी से चढ़कर कोषागार भवन में झंडा फहरा दिया उसके बाद भूपेंद्र बाबू के अगुआई में जुलूस ने रजिस्ट्री ऑफिस में झंडा फहराया। 15 अगस्त को कमलेश्वरी प्रसाद मंडल (मनहरा सुखासन) प्रेम नारायण मिश्र (जोगबनी) के नेतृत्व में हजारों सत्याग्रही ने स्वयं सेवको ऑफिस पर पुलिस को खदेड़ कर कब्जा किया। और घोषणा किया कि अंग्रेज राज समाप्त हो गया। 17 अगस्त को हजारों की संख्या में महिलाएं समेत स्वराज ऑफिस पहुंचे, जिसका नेतृत्व संथाल रघुनंदन टुडू कर रहे थे। इसी संदर्भ में मधेपुरा के दरोगा अर्जुन प्रसाद सिंह ने महताब लाल यादव, कुंज बिहारी लाल दास, देवदत्त, कुदरत मियां, भूपेंद्र बाबू और अयोध्या प्रसाद को गिरफ्तार कर लिया। कुछ बिहारी क्रांतिकारी राम बहादुर सिंह, कमलेश्वरी प्रसाद सिंह, सरयुग प्रसाद सिंह व अन्य को फरार घोषित कर कार्रवाई की फलतः 18 अगस्त को मधेपुरा मुरलीगंज बंद रहा।

किशनगंज सत्याग्रह :–

आलमनगर चौसा और किशनगंज के क्रांतिकारियों में आग धधक उठी सिंहेश्वर मंडल, सोमनाथ साहू, रामवृक्ष सिंह आदि सत्याग्रहयों के साथ लगभग दस हजार की संख्या में 16 अगस्त 1942 को किशनगंज थाने में धावा बोलकर सरकारी कागजों की होली जलाई। इसके बाद बिहारीगंज रेलवे

पटरी को तोड़–फोड़ किया। 25 सितंबर को सोमनाथ साहु व डॉ0 सत्यनारायण प्रसाद के नेतृत्व में डाक विभाग का कामकाज ठप करवा दिया गया।

सहरसा गोलीकांड :–

29 अगस्त को 14 युरोपीयन 38 बलुची सैनिक का एक दस्ता सहरसा पहुँचा जहाँ विरोध में संपुर्ण सहरसा में दुकानें बंद रहा और ग्रामीण लोग सहरसा में जमा होने लगे। भीड़ को देखकर सैनिक ने गोली चलाई फलतः पुलकित कामत, हरिकांत झा, भोला ठाकुर के द्वारा केदारनाथ तिवारी और कमलेश्वरी मंडल गोली से शहीद हो गए। इसी प्रकार यूरोपियनों सैनिकों से कोसी वासियों ने गोलियों का प्रवाह न कर डट कर मुकाबला किया। परिणामस्वरूप क्षेत्रीय आंदोलन से नतमस्तक होकर अंग्रेजों को भारतीय वीर सपूतों व गाँधीजी के नेतृत्व में आजादी देना पड़ा।

संदर्भ

1. हिमांशु अश्वनी कुमार, कोशि का गांधी – स्वतंत्र वीर श्री राम बहादुर सिंह पृ–76 सहरसा – 2001

2. मधेपुरा में स्वाधीनता आंदोलन का इतिहास पृ– 32, 1996

3. सहरसा जिला राजेटियर पृ– 43, 1965

4. कमलेश्वरी प्रसाद मंडल पृ– 5–6, श्रीवास्तव पुर्ण पृ– 45

5. भुवेश मिश्र पृ– 62

6. शिवनंदन प्रसाद मंडल – स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास

7. डॉ0 के0 के0 दत्त स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास खण्ड– 3

8. दैनिक समाचार–पत्र द टाइम्स ऑफ इंडिया, हिंदुस्तान

9. पत्रिकाएँ– दिनमान, रविवार

10. कोसी टाइम्स